टाइटैनिक

खोया...और पाया

जूडी डोनेली

चित्र: कीथ कोहलर

टाइटैनिक

खोया...और पाया

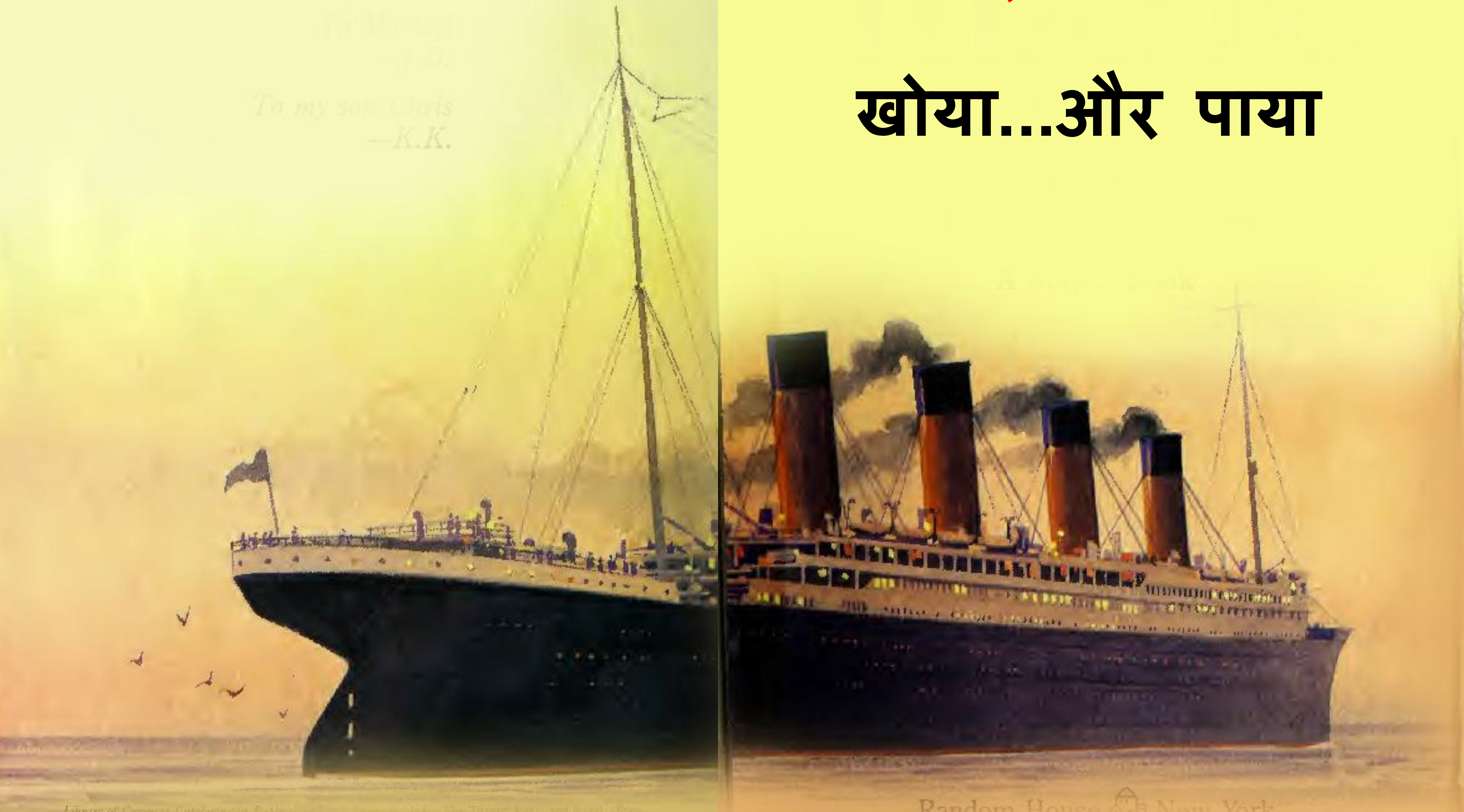

जूडी डोनेली

चित्र: कीथ कोहलर

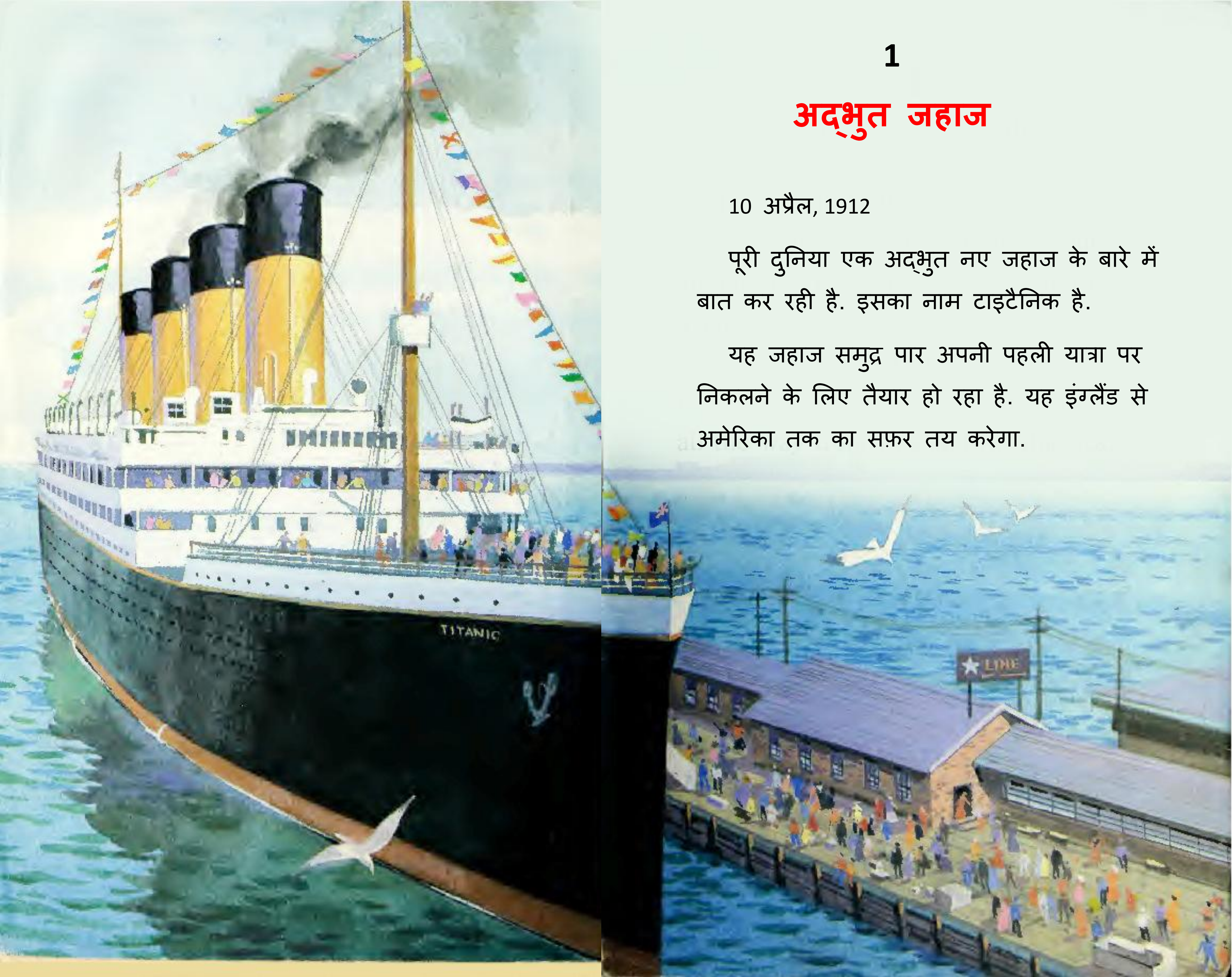

1

अद्भुत जहाज

10 अप्रैल, 1912

पूरी दुनिया एक अद्भुत नए जहाज के बारे में बात कर रही है. इसका नाम टाइटैनिक है.

यह जहाज समुद्र पार अपनी पहली यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हो रहा है. यह इंग्लैंड से अमेरिका तक का सफ़र तय करेगा.

अखबारों ने टाइटैनिक को "अद्भुत जहाज" बुलाया. उनके अनुसार वो एक तैरते हुए महल जैसा है. टाइटैनिक में रेस्टोरेंट, एक डाकघर और यहाँ तक कि एक जिम भी है जहाँ सवारी के लिए एक खिलौना ऊँट भी है.

यह तस्वीर जहाज का एक क्रॉस-सेक्शन दिखाती है - जैसे उसे चीरकर अलग कर दिया गया हो. आलीशान कमरे ऊपरी डेक पर हैं. सबसे निचले डेक पर आप स्क्वैश कोर्ट और स्विमिंग पूल देख सकते हैं.

टाइटैनिक दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा जहाज है. यह जहाज लगभग चार ब्लॉक लम्बा है और ग्यारह मंजिली इमारत जितना ऊँचा है.

सबसे अच्छी बात यह है कि विशेषज्ञों का कहना है कि टाइटैनिक अब तक का सबसे सुरक्षित जहाज है. वे कहते हैं कि वो डूब नहीं सकता. क्यों? जहाज का एक तल नहीं है—उसके दो तल हैं. एक दूसरे के अंदर है.

टाइटैनिक का सबसे निचला हिस्सा सोलह जलरोधी डिब्बों में बँटा हुआ है. अगर एक डिब्बे में पानी भरने लगे, तो कप्तान बस एक स्विच दबा सकता है. उससे एक मोटा स्टील का दरवाज़ा बंद हो जाएगा. पानी फँस जाएगा. फिर पानी जहाज के बाकी हिस्सों में नहीं भर सकेगा. दो, तीन या चार डिब्बे पानी से भरे हो सकते हैं. फिर भी, टाइटैनिक तैरता रहेगा.

टाइटैनिक का एक और उपनाम है– "अमीर लोगों का विशेष जहाज". दुनिया के कुछ सबसे अमीर लोग टाइटैनिक पर सफर कर रहे हैं. उनके टिकटों की कीमत एक नाविक की पूरी ज़िंदगी की कमाई से भी ज़्यादा है.

सभी यात्री अमीर नहीं हैं. कुछ के पास बहुत कम पैसे हैं. वे मौज-मस्ती के लिए यात्रा नहीं कर रहे हैं. वे अमेरिका में अपना नया घर ढूँढ़ने जा रहे हैं.

आखिरकार वह खास पल आ ही गया. टाइटैनिक रवाना होने के लिए तैयार है!

किनारे पर भीड़ जमा है. झंडे लहरा रहे हैं. बैंड बज रहा है.

यात्री डेक पर आ गए हैं. वे अपने दोस्तों को अलविदा कह रहे हैं.

इंजन गर्जना कर रहे हैं. धीरे-धीरे जहाज बंदरगाह से बाहर निकल रहा है. टाइटैनिक ने अपनी पहली यात्रा शुरू कर दी है.

किसी को अंदाज़ा नहीं था कि यह उसकी आखिरी यात्रा भी होगी.

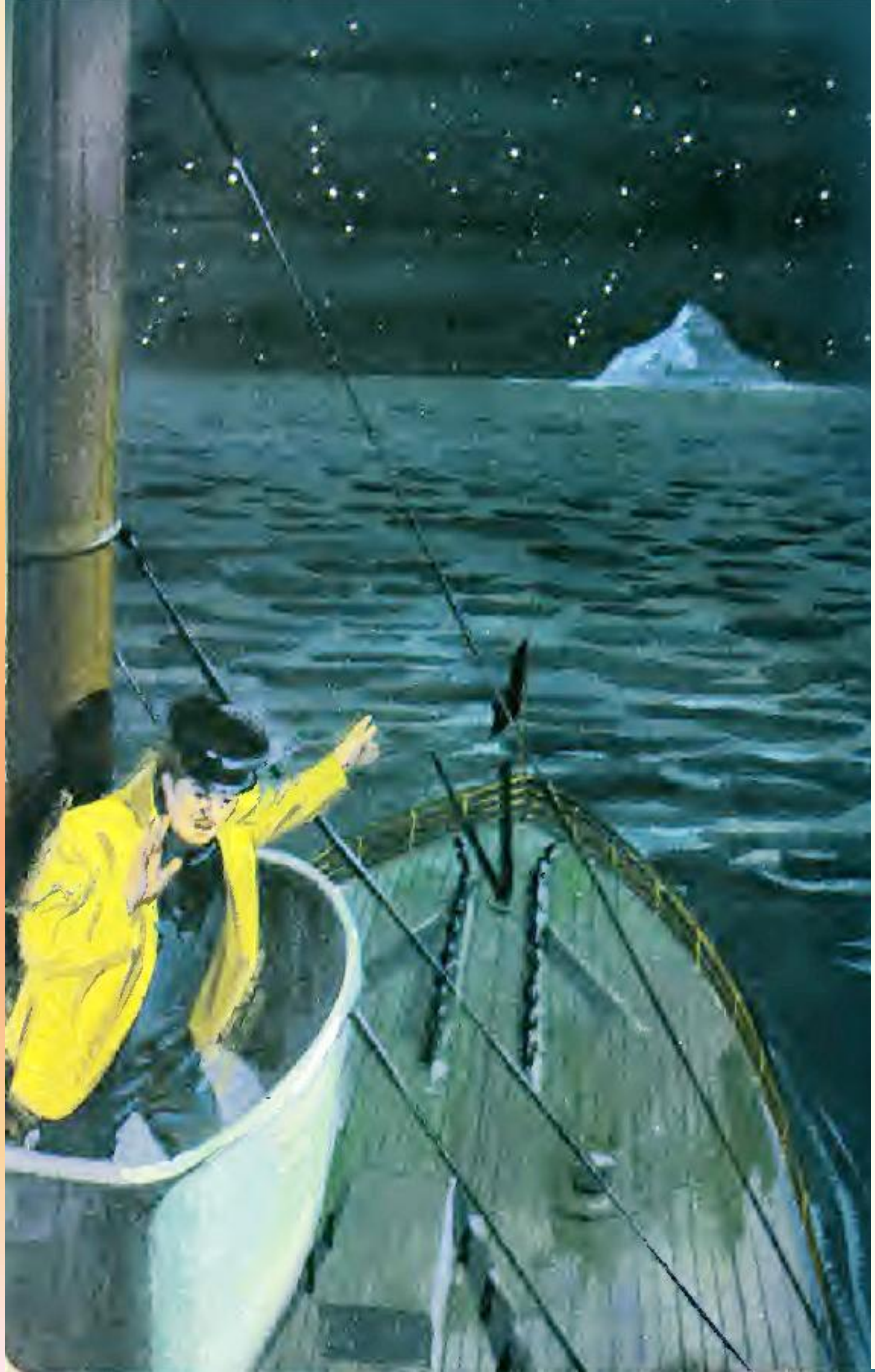

2

हिमखंड

यह 14 अप्रैल, 1912 है. टाइटैनिक कनाडा के तट के पास बर्फीले पानी में है.

लगभग आधी रात हो चुकी है. जहाज शांत है. समुद्र काँच की तरह चिकना है. हवा कड़कड़ाती ठंडक दे रही है.

यात्रियों ने अच्छा खाना खाया है. उनमें से कुछ अभी भी ताश खेल रहे हैं. ज़्यादातर अपने कमरों में सो रहे हैं.

रात अंदर रहने के लिए अच्छी है. लेकिन चौकीदार को खतरे से सावधान रहना होगा. वह जहाज के ऊपर कौवे के घोंसले (क्रोज-नेस्ट) में खड़ा है. वह अंधेरे में देखता है.

अचानक चौकीदार को एक काली आकृति दिखाई देती है. यह बर्फ का एक पहाड़ है! और टाइटैनिक सीधे उसकी ओर बढ़ रहा है! चौकीदार अलार्म बजाता है. वह चिल्लाता है, "हिमखंड सीधे आगे!"

एक नाविक नीचे जहाज़ को चला रहा है. वह जहाज़ को मोड़ने की कोशिश करता है. लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी है.

विशाल हिमखंड जहाज़ के किनारे से रगड़ खा रहा है.

एक धक्के की आवाज़ आती है. घिसने की आवाज़. वो आवाज़ ज़्यादा तेज़ नहीं यही. कुछ लोगों को तो उसका पता भी नहीं चलता है.

लेकिन कप्तान अपने कमरे से जल्दी से बाहर निकलता है. वह नीचे जाता है. वह देखना चाहता है कि जहाज़ को कोई नुकसान तो नहीं पहुँचा है. जल्द ही उसे भयानक सच्चाई का पता चलता है.

हिमखंड ने जहाज़ को बुरी तरह नुकसान पहुँचाया है. पानी अंदर घुस रहा है. पाँच जलरोधी डिब्बे पहले ही पानी से भर चुके हैं. और यह बहुत ज़्यादा है. अब कुछ नहीं किया जा सकता.

यह नामुमकिन लगता है. लेकिन यह सच है. टाइटैनिक डूबने वाला है!

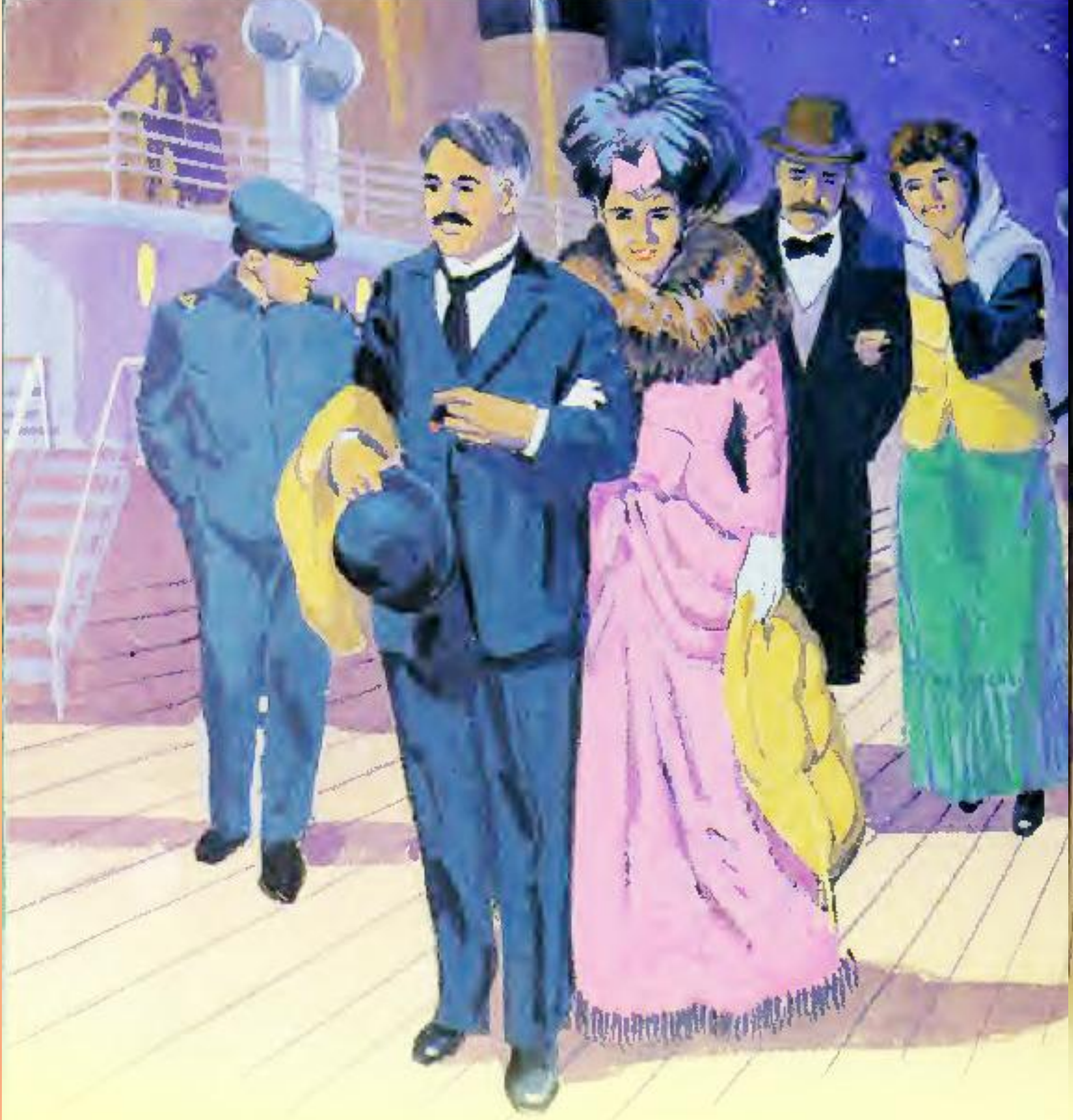

कप्तान आदेश देता है. यात्रियों को जगाओ! मदद के लिए रेडियो लगाओ! और लाइफबोट तैयार रखो!

कप्तान डर गया है. वह जानता है कि जहाज़ पर 2,227 लोग सवार हैं. और उनमें से सिर्फ़ 1,100 लोगों के लिए ही पर्याप्त लाइफबोट हैं.

यात्रियों को यह पता नहीं है. जैसे ही लोग डेक पर आते हैं, वे हँसी-मज़ाक करते हैं. कुछ लोग शाम के गाउन पहने होते हैं. कुछ लोग पजामे के ऊपर लाइफ जैकेट पहने होते हैं. लेकिन वे चिंतित नहीं दिखते हैं. उन्हें अब भी लगता है कि वे एक ऐसे जहाज़ पर हैं जो डूब नहीं सकता है.

लाइफबोट में चढ़ो, नाविक उनसे कहते हैं, "औरतें और बच्चे पहले चढ़ें. पुरुष तभी चढ़ें जब जगह हो."

कई लोग उसमें चढ़ना ही नहीं चाहते. बड़ा जहाज़ बहुत सुरक्षित लगता है, छोटी लाइफबोट सुरक्षित नहीं लगती हैं.

नाविक जल्दी में हैं. उन्हें पता है कि वे बड़ी मुसीबत में हैं. वे लोगों को जल्दी से लाइफबोट में चढ़ाते हैं. कुछ आधी ही भरी हैं, लेकिन नाविक फिर भी उन्हें नीचे उतार देते हैं.

कई यात्री लाइफबोट्स से दूर हैं. उनकी तकदीर खराब है. उनके कमरे नीचे हैं. उन्हें भी पता है कि मुसीबत आई है. लेकिन उन्हें नहीं पता कि कहाँ जाना है. कुछ लोग अपना रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं. वे ऊपर और नीचे हॉल में जाते हैं. कुछ लोगों की नाविक मदद करते हैं. ज़्यादातर नीचे ही इंतज़ार करते हैं.

रेडियो रूम में ऑपरेटर मदद के लिए पुकारता है. दूसरे जहाज जवाब देते हैं. लेकिन वे कई मील दूर हैं.

एक जहाज ज़्यादा दूर नहीं है. उसका नाम कैलिफ़ोर्नियन है. यह जहाज टाइटैनिक से सिर्फ़ दस मील दूर है. यह डूबते जहाज तक मिनटों में पहुँच सकता है और सभी को बचा सकता है.

टाइटैनिक का ऑपरेटर बार-बार पुकारता है. लेकिन कैलिफ़ोर्नियन जवाब नहीं देता. रात हो चुकी है और जहाज का रेडियो बंद है. जहाज़ पर कोई भी मदद की पुकार नहीं सुनता.

टाइटैनिक, कैलिफ़ोर्नियन को संकेत देने की कोशिश करता है. वह आतिशबाजी जैसे दिखने वाले रॉकेट छोड़ता है. कैलिफ़ोर्नियन के नाविक रॉकेट देखते हैं. लेकिन वे समझ नहीं पाते कि टाइटैनिक मुसीबत में है. इसलिए वे नहीं आते.

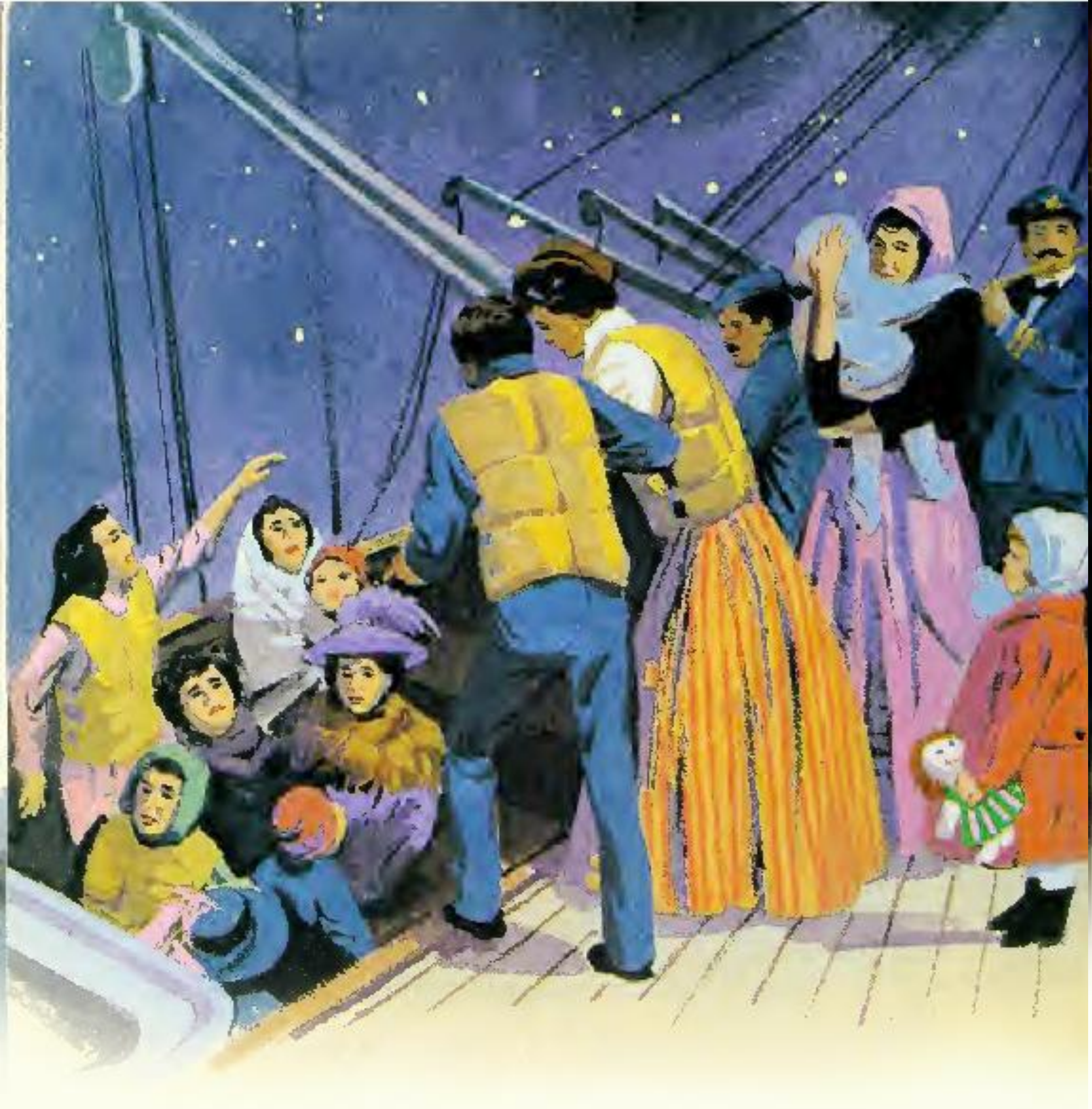

टाइटैनिक पर बैंड बज रहा है. संगीत खुशनुमा है. लेकिन लोग अब डरे हुए हैं. डेक उनके पैरों तले झुक रहा है.

जहाज़ और ज़्यादा झुक रहा है. निचले डेक पानी में डूबे हुए हैं.

दो लाइफबोट बची हैं, लेकिन नाविक उन्हें निकाल नहीं पा रहे हैं. सैकड़ों-हज़ारों लोग अभी भी जहाज़ पर हैं. और अब तक उन्हें भी पता चल गया है कि अंत निकट है.

एक बूढ़ा जोड़ा हाथ पकड़े हुए है. पत्नी अपने पति को नहीं छोड़ेगी. एक आदमी अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनता है. "मैं एक सज्जन व्यक्ति की तरह मरूँगा," वह कहता है.

कुछ लोग बर्फीले पानी में कूद जाते हैं. कुछ भाग्यशाली होते हैं. वे एक लाइफबोट तक पहुँच जाते हैं.

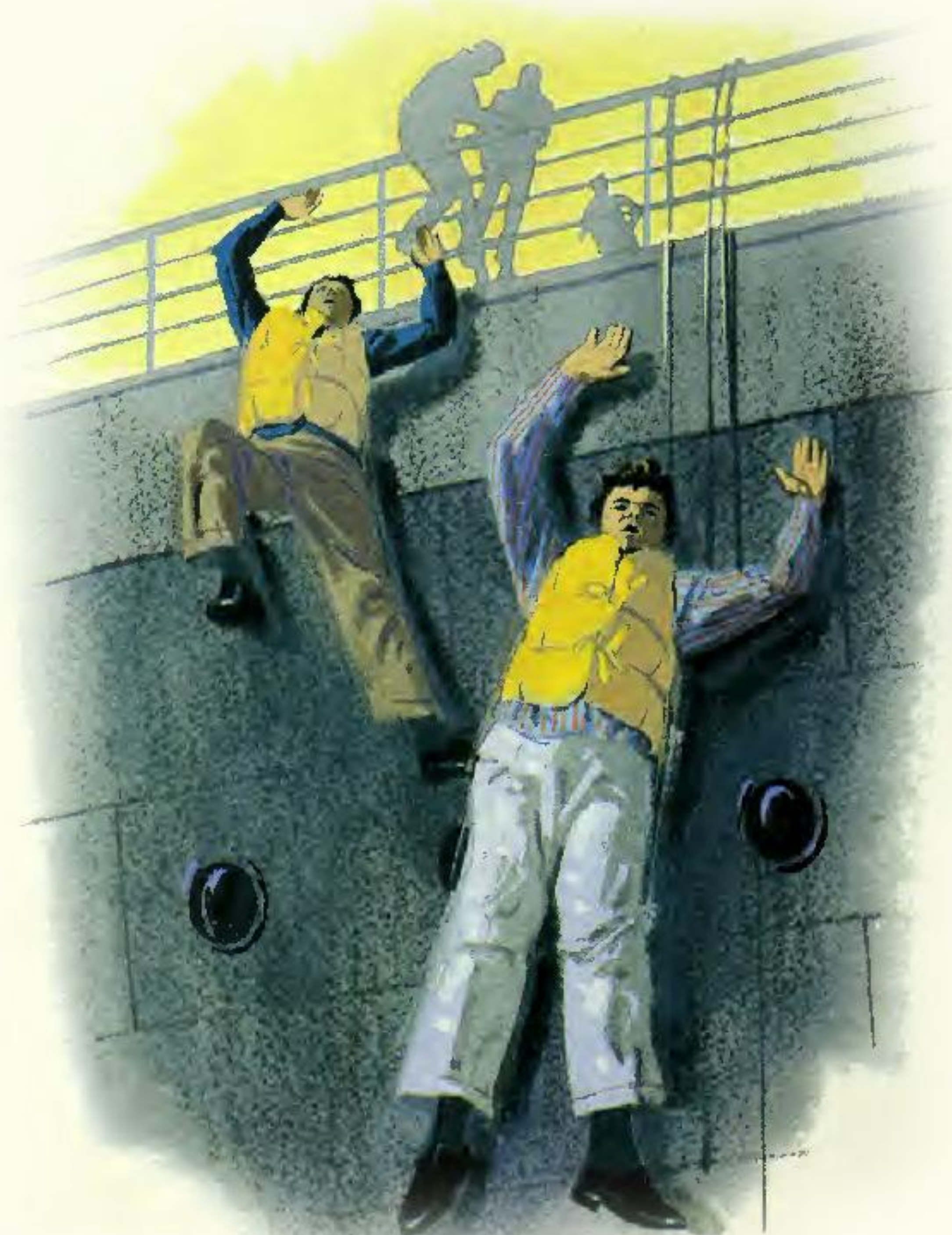

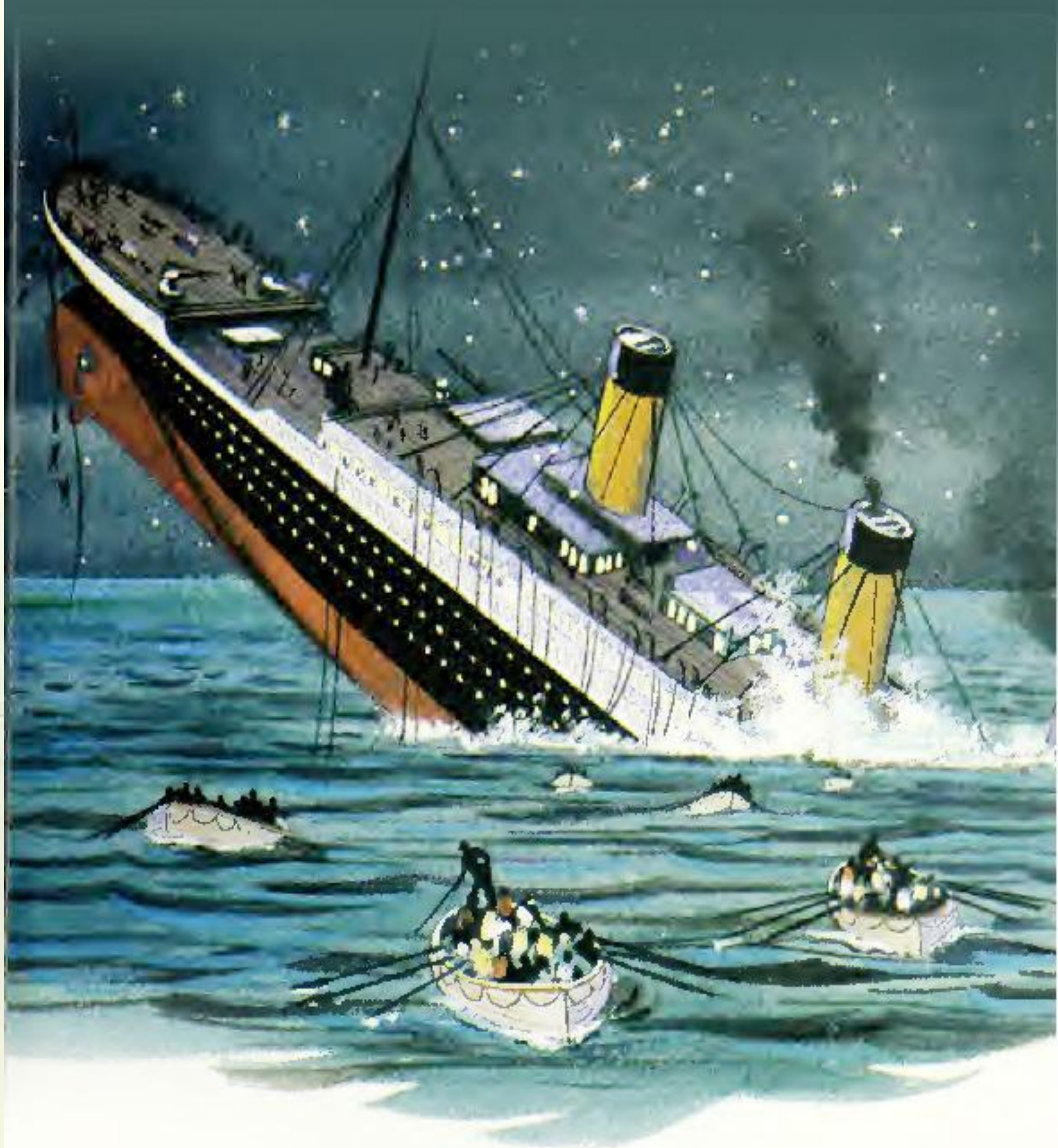

लाइफबोट में सवार लोग टाइटैनिक से दूर चले जाते हैं. हर कोई उस खूबसूरत जहाज़ को देख रहा है. उसकी रोशनियाँ जगमगा रही हैं. पानी में जीवंत संगीत गूंज रहा है.

फिर संगीत बदल जाता है. बैंड एक दुखी धुन बजाता है.

विशाल जहाज़ का एक सिरा धीरे-धीरे समुद्र में सरकता है. संगीत बंद हो जाता है. ज़ोरदार गर्जना होती है. लाखों चिंगारियाँ हवा में उड़ती हैं. जहाज़ का दूसरा सिरा सीधा ऊपर की ओर झूलता है.

एक पल के लिए टाइटैनिक तारों की ओर देखता रहता है. फिर वह काले पानी में गायब हो जाता है

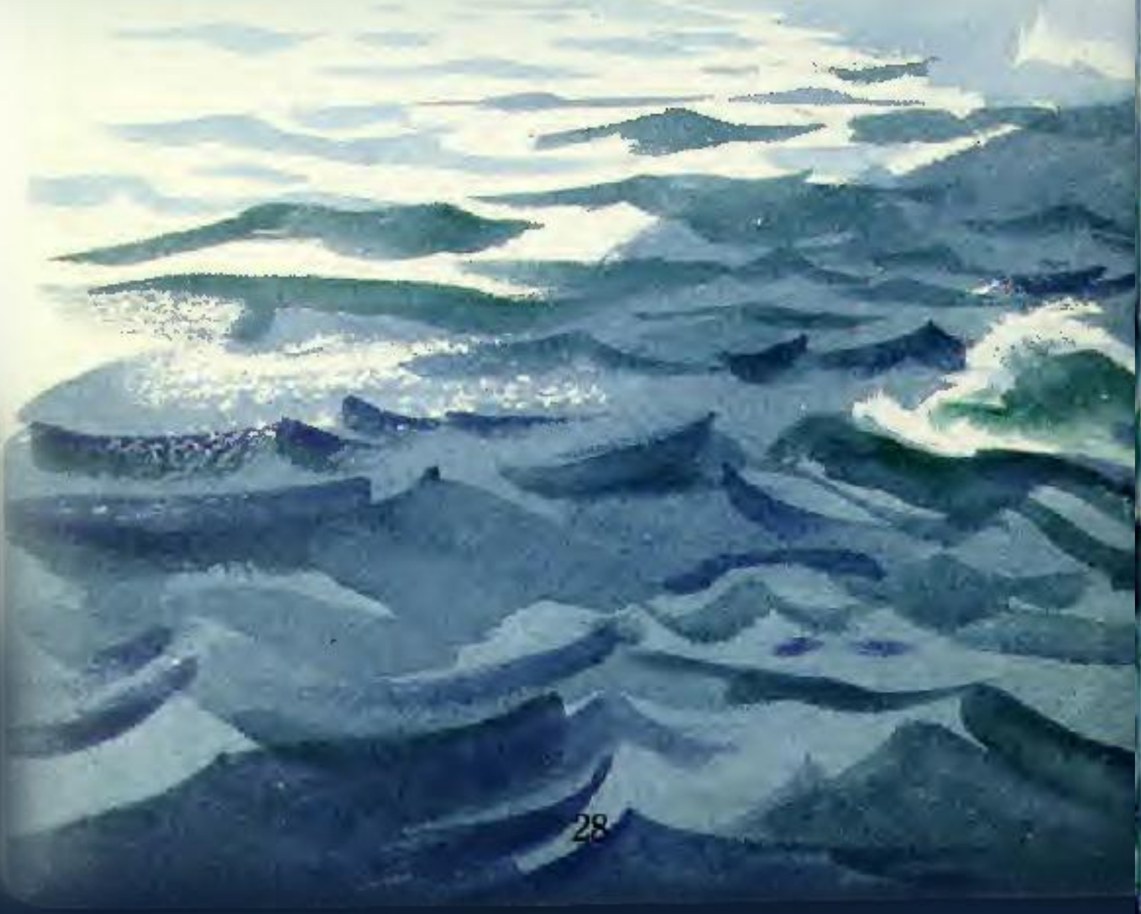

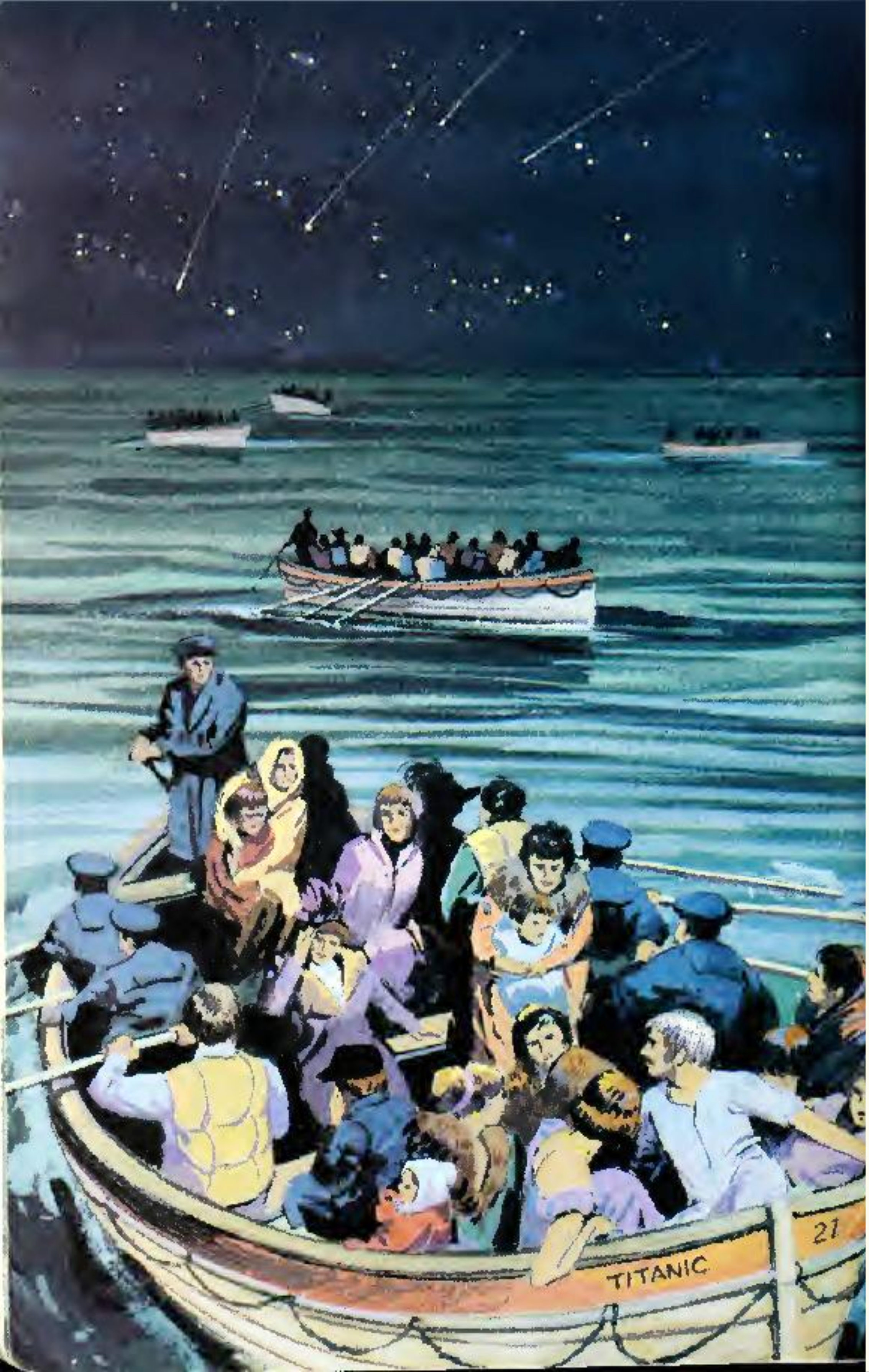

3

फिर कभी नहीं

15 अप्रैल की सुबह के 2:20 बज रहे हैं.

टाइटैनिक चला गया है.

लाइफबोट में बैठे लोग रात को घूर रहे हैं. आसमान टूटते तारों से भरा है. लेकिन अँधेरा है. और कड़ाके की ठंड है.

ज़्यादातर लाइफबोट एक-दूसरे से दूर जा चुकी हैं.

लोग बस इंतज़ार कर रहे हैं. और वे गर्म होने की कोशिश कर रहे हैं. कुछ ने फर कोट पहन रखे हैं. कुछ ने बाथरोब और चप्पलें पहन रखी हैं. एक आदमी सिर्फ़ अपने अंडरवियर में है. सबसे ज़्यादा ठंड उन लोगों को लग रही है जो जहाज़ से कूदकर नाव तक तैरकर पहुँचे. उनके बाल और कपड़े बर्फ़ से जम गए हैं.

एक लाइफबोट उल्टी पड़ी है. लगभग तीस आदमी उस पर खड़े हैं. नाव को डूबने से बचाने के लिए वे इधर-उधर झुक रहे हैं. बर्फीली लहरें उनके पैरों से टकरा रही हैं.

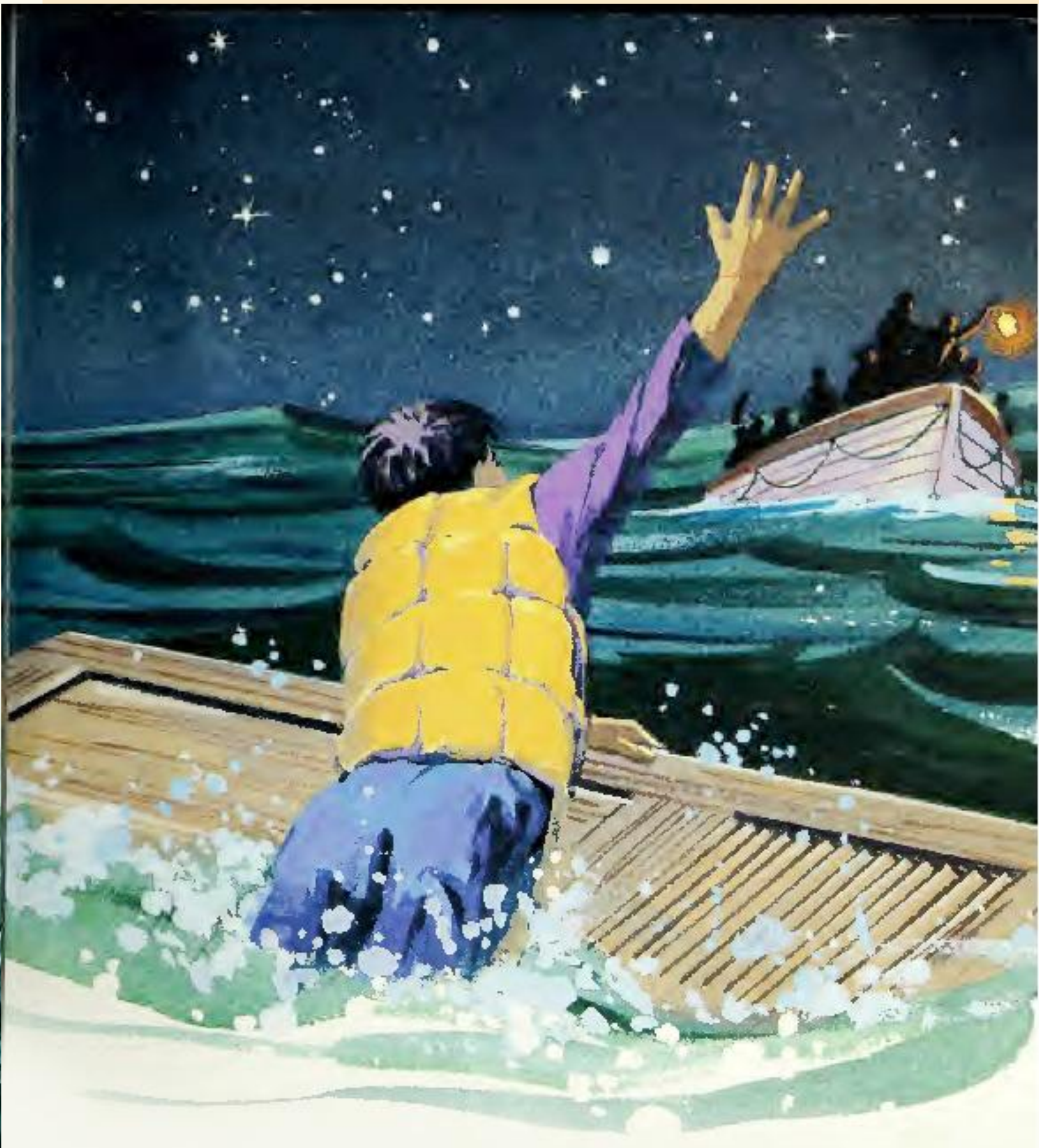

एक लाइफबोट मदद करने की कोशिश में वापस आती है. वे एक आदमी को बचा लेती है. वह लकड़ी के फट्टे पर तैर रहा है. उन्हें और ज़्यादा लोग नहीं मिलते. बर्फीले पानी में कोई भी ज़्यादा देर तक नहीं टिक सकता है.

घंटे बीत जाते हैं. आसमान में उजाला होता जाता है. ऐसा लगता है जैसे मदद कभी नहीं आएगी. फिर अचानक एक रोशनी कौंधती है. फिर एक और. यह एक जहाज़ है—कार्पेथिया. यह अट्ठावन मील दूर से आया है.

सब हाथ हिलाते हैं और जयकार करते हैं. वे मशालें जलाते हैं. वे कागज़, रूमाल—कुछ भी जलाते हैं. वे जहाज़ को खुद को दिखाना चाहते हैं.

सूरज उगने लगता है. चारों ओर हिमखंड हैं. बचाव जहाज़ लगभग एक हिमखंड से टकरा जाता है, लेकिन ठीक समय पर मुड़ जाता है. जहाज़ लाइफबोट्स की ओर बढ़ता रहता है.

आखिरकार मदद आ ही गई.

सबकी निगाहें बचाव जहाज़ पर हैं. एक नाव के बाद दूसरी नाव द्वारा लोगों को जहाज पर चढ़ाया जाता है. समुद्र उफान पर है और इसमें कई घंटे लगते हैं. लेकिन आखिरकार सभी सुरक्षित हैं.

जल्द ही दुनिया भर में खबर फैल जाती है. न डूबने वाला टाइटैनिक डूब गया है. 2,200 से ज़्यादा लोग रवाना हुए. केवल 705 ही बचाए जा सके.

कैसे? क्यों? कोई समझ नहीं पा रहा है.

जब बचाव जहाज न्यूयॉर्क पहुँचता है, तो चालीस हज़ार लोग इंतज़ार कर रहे होते हैं. टाइटैनिक के बचे हुए लोग अपनी कहानियाँ सुनाते हैं.

दुनिया को सच्चाई पता चलती है. सबसे सुरक्षित जहाज भी सच में बिल्कुल सुरक्षित नहीं था.

टाइटैनिक के लिए बहुत देर हो चुकी थी. लेकिन दूसरे जहाजों के लिए भी देर नहीं हुई थी.

नए सुरक्षा कानून पारित किए गए. डिज़ाइन में बदलाव किए गए.

आज हर जहाज में हर यात्री के लिए पर्याप्त लाइफबोट होनी चाहिए. और हर जहाज में लाइफबोट अभ्यास भी होते हैं ताकि लोग जान सकें कि दुर्घटना होने पर क्या करना है.

जहाज के रेडियो कभी बंद नहीं किए जा सकते. मदद की हर पुकार सुनी जाती है.

और अब एक विशेष बर्फ गश्ती दल है. गश्ती विमान खतरनाक हिमखंडों पर नज़र रखते हैं. वे जहाजों को चेतावनी देते हैं. अब कभी भी कोई हिमखंड किसी जहाज को अचानक नहीं उड़ा सकता.

टाइटैनिक एक भयानक क्षति थी. लेकिन दुनिया ने उससे सबक सीखा.

4

आखिरकार मिल गया

साल बीत गए. टाइटैनिक कई मील नीचे काले, बर्फीले ठंडे पानी में पड़ा था.

कोई भी गोताखोर इतने गहरे पानी में नहीं जा सकता था. और कोई भी जहाज को ढूंढ भी नहीं पाया. नीचे दिया गया नक्शा आपको मोटे तौर पर दिखाता है कि टाइटैनिक कहाँ डूबा था.

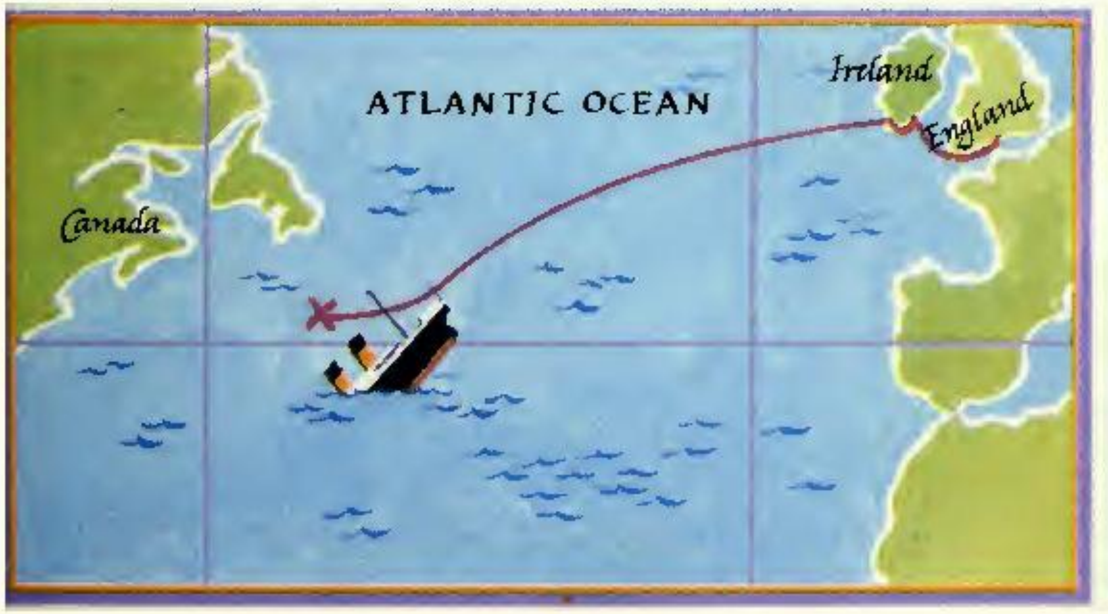

कुछ लोगों को लगा कि टाइटैनिक जहाज़ चकनाचूर हो गया था. उन्होंने कहा कि शायद इसके लाखों टुकड़े हो गए होंगे.

फिर भी खजाने की खोज करने वाले उस अद्भुत जहाज़ के सपने देखते रहे. उन्हें यकीन था कि उसमें सोना है—और हीरे-मोती भी.

रॉबर्ट बैलार्ड नाम के एक व्यक्ति ने भी टाइटैनिक का सपना देखा था. रॉबर्ट एक वैज्ञानिक था. उसने महासागरों का अध्ययन किया था.

रॉबर्ट मैसाचुसेट्स के वुड्स-होल की प्रसिद्ध प्रयोगशाला में काम करता था. उसे खजाने की कोई परवाह नहीं थी. वह बस जहाज़ को ढूँढ़ना चाहता था. उसने इसके बारे में वर्षों तक सोचा.

रॉबर्ट ने एक ख़ास आविष्कार किया था. यह एक तरह का पानी के नीचे चलने वाला रोबोट था. इसका नाम "आर्गो" था.

"आर्गो" बहुत, बहुत गहराई तक गोता लगा सकता था. उसमें रोशनी और एक वीडियो कैमरा था. यह समुद्र तल पर तैर सकता था. यह पानी के नीचे वीडियो तस्वीरें ले सकता था. और यह उन्हें जहाज़ पर लगे टीवी स्क्रीन पर भेज सकता था.

रॉबर्ट ने टाइटैनिक के बारे में सब कुछ पढ़ा. उसने नक्शे और तस्वीरें देखीं. आखिरकार वह तैयार हो गया. उसे लगा कि वह जानता था कि वह रहस्यमयी जहाज़ कहाँ इंतज़ार कर रहा था.

1985 की गर्मियों में, रॉबर्ट उत्तर की ओर न्यूफ़ाउंडलैंड के लिए रवाना हुए. वे वैज्ञानिकों की एक टीम के साथ गए. वे "आर्गो" को भी अपने साथ ले गए.

रॉबर्ट ने "आर्गो" को शिकार पर भेजा. उन्हें अपने पैर तक गीले नहीं करने पड़े. लेकिन उन्हें काफ़ी निगरानी करनी पड़ी. कई दिनों तक यही स्थिति रही. उन्हें रेत ही रेत दिखाई देती रही.

फिर आख़िरकार स्क्रीन पर कुछ अलग दिखाई दिया. क्या यह कोई जहाज़ था? हाँ, था. एक विशाल जहाज़.

दूसरे वैज्ञानिक खुशी से झूम उठे. उन्होंने कर दिखाया. उन्होंने टाइटैनिक ढूंढ़ लिया था!

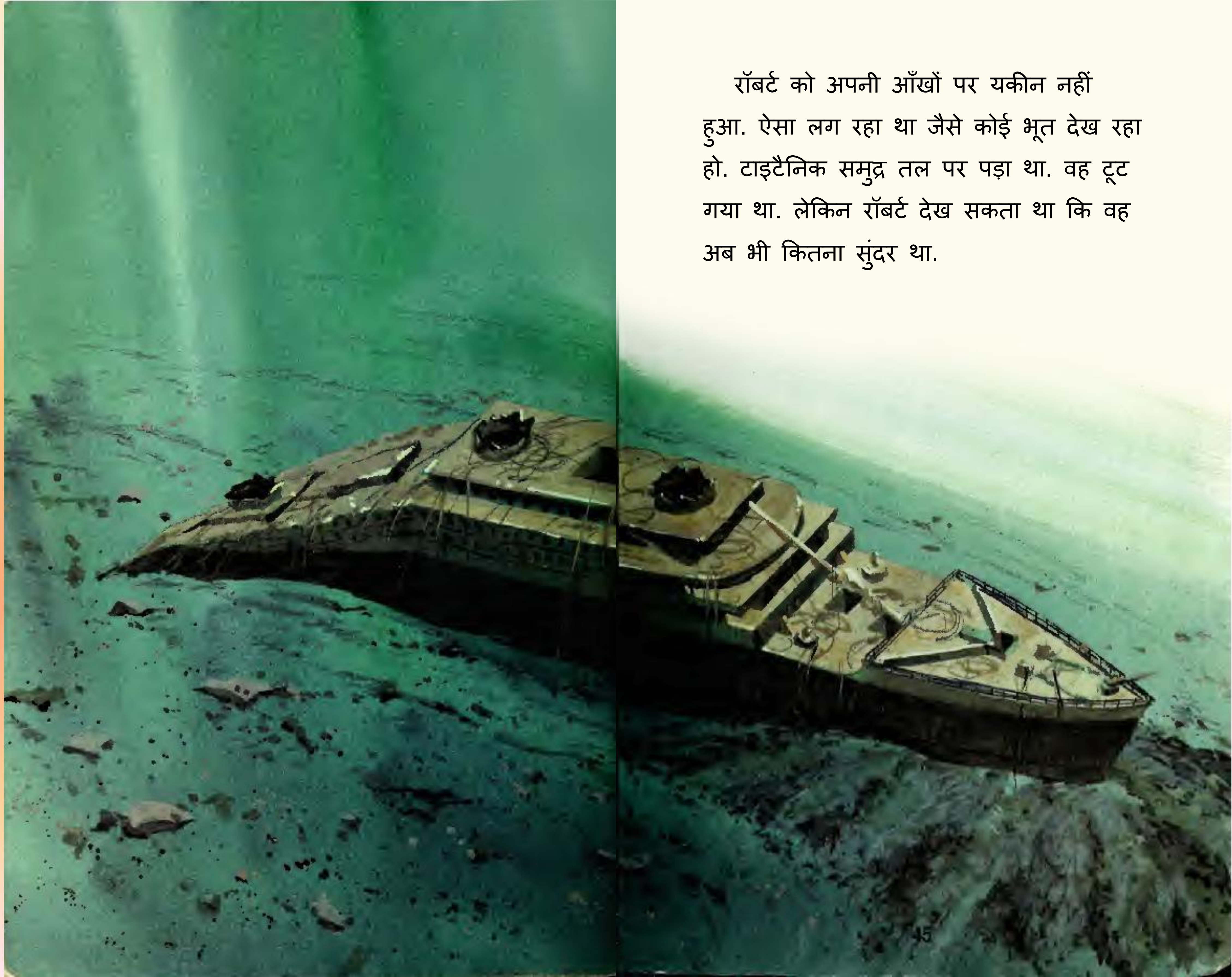

रॉबर्ट को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ. ऐसा लग रहा था जैसे कोई भूत देख रहा हो. टाइटैनिक समुद्र तल पर पड़ा था. वह टूट गया था. लेकिन रॉबर्ट देख सकता था कि वह अब भी कितना सुंदर था.

दिनों के साथ रॉबर्ट ने जहाज़ को और भी ज़्यादा देखा. उसने कौवे का घोंसला (क्रोज-नेस्ट) देखा जहाँ से चौकीदार ने पहली बार हिमखंड देखा था. रेत में एक खूबसूरत काँच की खिड़की थी. जहाज़ के विशाल लंगर वहाँ थे. शराब की बोतलें इधर-उधर बिखरी हुई थीं. और सूटकेस भी.

यह अद्भुत था. और दुखद भी. इतने सारे लोग यात्रा पर निकले थे. बहुत कम लोग लौटे थे.

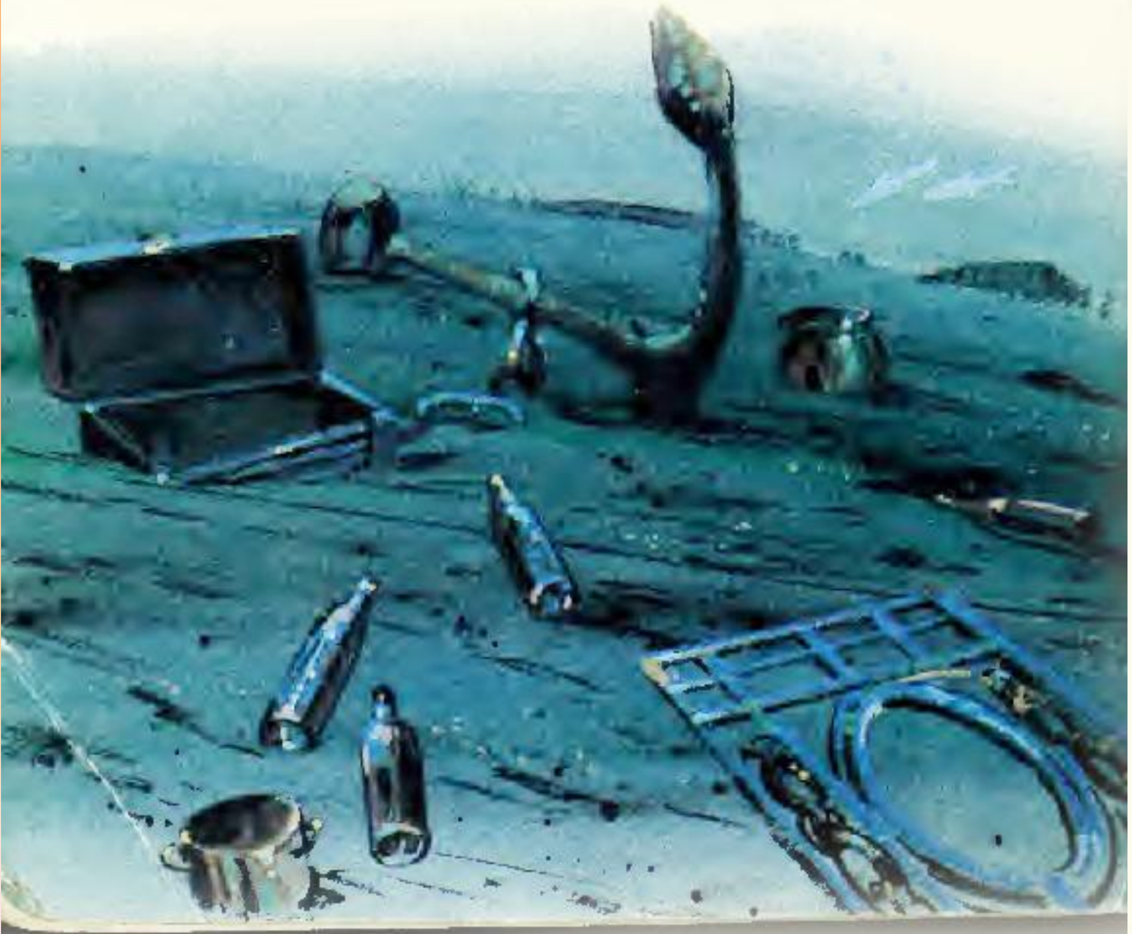

आखिरकार रॉबर्ट घर लौट आया. उसने किसी को नहीं बताया कि उसे टाइटैनिक कहाँ मिला था. वो चाहता था कि जहाज़ वैसा ही रहे जैसा था. वह नहीं चाहता था कि खजाने की खोज करने वाले आकर उसे लूट लें.

रॉबर्ट टाइटैनिक पर वापस जाना चाहता था. और एक साल बाद वह वहां दुबारा गया. उसने टाइटैनिक के डेक पर एक छोटी पनडुब्बी उतारी. उसने जहाज़ के अंदर एक रोबोट भेजा.

रॉबर्ट ने वहां से कुछ भी नहीं लिया. लेकिन उसने कुछ पीछे छोड़ा. वो एक संदेश था. उसने इसे उन सभी के लिए छोड़ा जो टाइटैनिक को ढूंढ सकते थे. इसमें कहा गया था कि इस विशाल जहाज़ को शांति से छोड़ दिया जाए.

दुनिया भर के लोग रॉबर्ट के काम से रोमांचित थे. कुछ लोगों के लिए, यह बहुत खास था. वे लोग टाइटैनिक पर सफ़र कर चुके थे.

तब वे छोटे बच्चे थे. अब वे बहुत बूढ़े हो गए थे.

लेकिन वे "नहीं डूबने वाले टाइटैनिक" को कभी नहीं भूले थे.

दुनिया भी उसे कभी नहीं भूलेगी.

टाइटैनिक

खोया और पाया

टाइटैनिक दुनिया का

अब तक का

सबसे बड़ा जहाज था.

लोगों का कहना था कि यह

सबसे सुरक्षित जहाज भी था.

लेकिन अपनी पहली ही यात्रा में

टाइटैनिक समुद्र की तलहटी में डूब गया!

यह भयानक घटना कैसे घटी?

और अब इस विशाल जहाज का मलबा कहाँ है?

इस रोमांचक सच्ची कहानी में जानें.